सामूहिक व्यवहार (Collective Behaviour)

सामूहिक व्यवहार की अवधारणा

सामूहिक व्यवहार प्रत्यय का प्रयोग समाजशास्त्रियों द्वारा एक ऐसे समूह के व्यवहार को बताने के लिए किया जाता है जोकि व्यवहार के सामान्य नियमों द्वारा निर्देशित नहीं होते। अधिकांशतः समूह के लोग एक निर्धारित नियमावली के अनुसार व्यवहार करते हैं परन्तु कभी-कभी वे नियमों की अवहेलना करके अपनी इच्छानुसार भी व्यवहार करते हैं सामूहिक व्यवहार ऐसे ही व्यवहार की ओर संकेत करता है।

सामूहिक व्यवहार की सर्वप्रथम व्याख्या Le Bon (लीबॉन) के Crowd Mind (भीड़ मस्तिष्क) सिद्धान्त में मिलता है। Blumer ने आम (सामान्य) सामाजिक जीवन में प्रतीकात्मक अन्तः क्रिया और सामूहिक व्यवहार में चक्रीय प्रतिक्रिया के बीच अन्तर किया है। Blumer का कहना है कि भीड़ व्यक्तियों की तार्किक क्षमता पर नियंत्रण करके उनके व्यवहार पर नियन्त्रण करती है और व्यक्ति अपनी सोच को भीड़ के अनुसार मोड़ लेता है और वैसा ही व्यवहार करने लगता है। यही सामूहिक व्यवहार है।

Ian Robertson (इआन रॉबर्टसन) के अनुसार, "सामूहिक व्यवहार ऐसे व्यवहार की ओर संकेत करता है जोकि सापेक्षिक रूप से

स्वाभाविक और असंरचित सोच, भावना और व्यवहार को प्रदर्शित करता है और यह व्यक्तियों के विशाल समूह का एक भाग होता है।"

जब मनुष्य सामूहिक जीवन से सम्बन्धित व्यवहारों को अन्य लोगों के साथ मिलकर करता है तथा जिन व्यक्तियों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से केवल समूह की इच्छाओं को पूरा करने के लिए जुड़ता है जिनकी सहभागिता अपेक्षाकृत असंगठित, अनिश्चित, अनियोजित तथा निर्योजनहीन होती है। इस समूह के द्वारा किये गए व्यवहार सामूहिक व्यवहार कहलाते हैं जो अस्थाई होते हैं। ऐसे सामूहिक व्यवहारों को हम भीड़, जनविद्रोह, आदिम धार्मिक व्यवहार, सुधार आन्दोलन, क्रान्तिकारी आन्दोलन, सामाजिक असंतोष आदि सामूहिक व्यवहार के विभिन्न रूप हैं। सामूहिक व्यवहार सामाजिक आ० की एक विशेषता है तथा यह समूह व्यवहार से भिन्न होता है। आजकल समाजशास्त्र में सामूहिक व्यवहार का अर्थ एक विशाल जनसमूह की ऐसी क्रियाओं से लिया जाता है जो किसी समाज के सामान्य ढांचे को बदलने के लिए की जाती है तथा जिसमें जनसमूह का हित पाया जाता है। इस प्रकार सामूहिक व्यवहार सामूहिक परिस्थिति में दो एक से अधिक व्यक्तियों का व्यवहार है जिनमें किसी सामान्य समूह का सदस्य होने की चेतना पाई जाती है चाहे इनका पारस्परिक सम्बन्ध प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष।

Scanned with CamScanner

N. J. Smelser (स्मेलसर) के अनुसार, "सामूहिक व्यवहार को सापेक्षिक रूप से मानव समूह की असंगठित सामाजिक अन्तः क्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" Smelser ने सामूहिक व्यवहार का न्यूनतम सिद्धान्त अपने लेख 'Theory of Collective Behaviour" (1963) में प्रस्तुत किया है उन्होंने कहा है कि समाज में तीव्र परिवर्तन और राजनीतिक उथल-पुथल की अवधि में सामाजिक आन्दोलनों को प्रेरित करने में सामान्यीकृत विश्वासों और मूल्यों की अहम भूमिका होती है। Smelser ने सामूहिक व्यवहार के कुछ निर्धारित तत्वों की ओर संकेत किया है जो निम्नवत् है —

1- संरचनात्मक प्रेरक स्थिति अर्थात ऐसी अनुमति बोधक दशाएँ (जिनके अन्तर्गत सामूहिक व्यवहार को वैध माना जाता है)
2. संरचनात्मक तनाव (जैसे आर्थिक वंचन)
3. सामान्यीकृत विश्वास का विकास एवं प्रसार (जैसे जनउन्माद (Hustena) तथा किसी (लोग) तरह के शैतान की धारणा का निर्माण)
4. उत्पन्न करने वाले कारक
5. कार्यवाही हेतु सहभागियों को तैयार करना (किसी सामाजिक आन्दोलन में प्रभावशाली नेतृत्व के माध्यम से)
6. सामाजिक नियन्त्रण का क्रियान्वयन

Scanned with CamScanner

Smelser ने अन्तिम निर्धारक तत्व अर्थात् सामाजिक नियन्त्रण को महत्व दिया है। एक बार सामूहिक व्यवहार की कोई घटना घट जाती है तब इसकी अवधि एवं तीव्रता का निर्धारण सामाजिक नियन्त्रण के अभिकरणों की प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करता है।

सामूहिक व्यवहार की विशेषताएँ

1- सामूहिक व्यवहार की प्रकृति क्षणिक होती है और यह पूर्णतः असियोजित होते हैं।
2. इस प्रकार का व्यवहार किसी भी प्रकार के नियमों या प्रक्रियाओं से नियंत्रित नहीं होते।
3- क्योंकि यह व्यवहार किन्हीं नियमों से बंधे नहीं होते इसीलिए इनकी भविष्यवाणी भी नहीं की जा सकती।
4- जब व्यक्ति किसी दुर्घटना, आग, झगड़ा या दंगों के समय एक स्थान पर एकत्रित होते हैं जोकि पहले से नियोजित नहीं होती, न ही वह एक-दूसरे को जानते हैं तब वह आक्रोश में आकर गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार कर देते हैं।
5- ऐसी घटना जिसमें व्यक्ति इकट्ठे होते हैं वह प्रायः कोई असामान्य घटना होती है जैसे- दंगा, दुर्घटना, आग लगना आदि।
6. अफवाहें या गलत सूचनाएँ इस प्रकार के सामूहिक व्यवहार को अधिक उग्र बना देते हैं। जबकि कोई भी असली कारण नहीं जानता जिसने इस घटना को जन्म दिया है।
7- ऐसा व्यवहार केवल अफवाहों से ही नहीं बल्कि

Scanned with CamScanner

विश्वास, उम्मीद, भय, दुश्मनी और ईर्ष्या से भी निर्देशित होता है।

8. सामूहिक व्यवहार का गहरा सम्बन्ध समुदाय के सांस्कृतिक प्रतिमानों से होता है। जैसे- मुस्लिम धार्मिक मामलों में या हिन्दू जाति के मामले में तेज़ प्रतिक्रिया देते हैं।

सामूहिक व्यवहार और सामाजिक आन्दोलन

सामाजिक आन्दोलन भी एक प्रकार का सामाजिक व्यवहार है जोकि सामूहिक क्रिया से मिलता-जुलता है। अर्थात् यह भी एक प्रकार का सामूहिक व्यवहार ही है। Ian Robertson के अनुसार, "एक सामाजिक आन्दोलन में व्यक्तियों का एक विशाल समूह सामाजिक या सांस्कृतिक परिवर्तन लाने के लिए एक साथ मिलकर प्रयास करता है।" जैसे- नारी मुक्ति आन्दो., अयोध्या आ., नक्सलवादी आ., पर्यावरण बचाओ आ., Trade Union (ट्रेड यूनियन) आन्दो., जनजातीय आ., विद्यार्थी आ. आदि।

कुछ समाजशास्त्रियों का मानना है कि सामाजिक आन्दो. सामूहिक व्यवहार का ही एक प्रकार है परन्तु कुछ अन्य का मानना है कि यह अलग परन्तु सम्बन्धित प्रघटना है। कभी-कभी इन दोनों में अन्तर करना मुश्किल हो जाता है।

Scanned with CamScanner

60 के दशक की हिप्पी संस्कृति सामूहिक व्यवहार की परिभाषा के अनुरूप है। यह आ. असंरचित और असंगठित था जबकि 'मानव अधिकार आन्दोलन' संगठित आ. है। पर्यावरणीय संरक्षण जैसे कुछ आ. इन दोनों के बीच के होते है।

समाजशास्त्री सामूहिक व्यवहार और सामाजिक आन्दो. दोनों के अध्ययन में रुचि लेता है न केवल इसलिए कि यह ~~सामाजिक~~ एक आकर्षक अध्ययन है बल्कि इसलिए भी कि यह सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण तथ्य है। Robertson के अनुसार, "सामाजिक आन्दोलन न सिर्फ नए मूल्यों, मान्यताओं का स्रोत होते हैं बल्कि यह मानव इतिहास के परिवर्तन का कारण भी बनते हैं।" परन्तु अभी हमें इसकी असल प्रकृति और अर्थ को सामाजिक जीवन में समझने में काफी समय लगेगा। सामूहिक व्यवहार और सामाजिक आन्दो. का यह अध्ययन अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है।

सामूहिक व्यवहार तथा भीड़ में अन्तर

	सामूहिक व्यवहार	भीड़
1-	सामूहिक व्य. की प्रकृति कार्य पूर्ण होने तक स्थिर होती है।	भीड़ की प्रकृति अस्थिर होती है।

Scanned with CamScanner

2. सा० व्य० एक संगठनात्मक प्रक्रिया है। यह संगठित और असंगठित दोनों प्रकार के होते हैं।	भीड़ असंगठित होती है।
3. सा० व्य० में एकाधिक व्यक्तियों का व्यवहार पाया जाता है।	भीड़ में व्यवहार अस्थाई होते हैं।
4. सा० व्य० में आकर्षण की शक्ति पाई जाती है। कार्य को पूरा होने तक यह आकर्षण बना रहता है।	भीड़ में अस्थाई आकर्षण पाया जाता है जो कुछ समय बाद समाप्त हो जाता है।
5. सा० व्य० अमूर्त है।	भीड़ मूर्त है।
6. सा० व्य० अपनी कार्य प्रणाली पर आधारित है।	भीड़ व्यक्तियों का एक तत्कालिक समूह है।
7. सा० व्य० का अन्त निश्चित होता है।	भीड़ का आरम्भ और अन्त दोनों ही अनिश्चित होता है।
8. सा० व्य० उद्देश्यपूर्ण होते हैं।	भीड़ उद्देश्यहीन होती है।
9. सा० व्य० में बुद्धि का स्तर उच्च होता है।	भीड़ में बुद्धि का स्तर अत्यन्त निम्न कोटि का होता है।
10. सा० व्य० में संवेग, भाव तथा विचार स्थाई होते हैं।	भीड़ में संवेग, भाव तथा विचार अस्थाई होते हैं।

Scanned with CamScanner